अनुक्रमणिका

प्रस्तावना

१, मूलकारका परिचय १–६९

(१) समय १

(२) जीवन-सामग्री १६

१ प्रभावकचरित्रगत प्रबन्धका सार १७, २ प्रबन्धोमे वर्णित घटनाओमें कमी-वेशी २५, ३ विचारणीय मुद्दे और उनकी चर्चा २७।

(३) सिद्धसेन और इतर आचार्य ३९

१ उमास्वाति और कुन्दकुन्द ३९, २ पूज्यपाद और समतभद्र ४२, ३ वट्टकेर मूलाचार ४८, ४ मल्लवादी और जिनभद्र ४८, ५ सिंहगणी क्षमाश्रमण, हरिभद्र और गन्धहस्ती ५७, ६ अकलक, वीरसेन और विद्यानन्दी ५८, ७ शीलाक, वादिवेताल शान्तिसूरि और वादिदेव ६१, ८ हेमचन्द्र और यशोविजय ६१।

(४) सिद्धसेन और जैनेतर आचार्य ६३

१ नागार्जुन, मैत्रेय, असग और वसुवन्धु ६३, २ अश्वघोष और कालिदास ६५, ३ दिङ्नाग और शकरस्वामी ६६, ४. धर्मकीर्ति और भामह ६७।

२, टीकाकारका परिचय ६९

(१) प्रशस्तियोके अनुसार शिष्य परिवार ७३

३, मूल और टीकाग्रन्थका परिचय ७३

(१) शाब्दिक स्वरूप ७६

१ नाम ७६, २ भाषा ७८, ३ रचनशैली ८०, ४ परिमाण ८०, ५ विभाग ८१

(२) आर्थिक स्वरूप ७६

१ अनेकान्त ८४, स्वरूप-व्याख्या ८४,–ऐतिहासिक

विकास ८४, २ तुलना ८६; ३ सवकी विषय ८८,—फलित वाद ८८, —दर्शन-ज्ञानमीमासा ९१,—अनेकान्तकी खूवी और एकान्तकी खामी ९३

४, बत्तीसियोंका परिचय ९५

(१) स्तुत्यात्मक १००
(२) समीक्षात्मक १०६
(३) दार्शनिक और वर्णनात्मक १०८

५, सम्पूर्ति ११४

(१) सिद्धसेनका समय और उनका सन्मतितर्क ११४
(२) सन्मतिकी रचनाका आधार ११६
(३) निर्युक्तिकार और क्रमवाद ११८
(४) सिद्धसेन और उनकी परिस्थिति १२०
(५) समन्तभद्र १२३

सन्मति-प्रकरण

१. प्रथम काण्ड १–३२

१ असाधारण गुणोके कथन द्वारा शासनका स्तुतिमगल १
२ उद्देश्य बतानेके साथ-साथ प्रकरण रचनेकी प्रतिज्ञा . . १
३ प्रकरणके प्रतिपाद्य मुख्य विषयका निर्देश . २
४ द्रव्यार्थिक नयके भेद . . ३
५ ऋजुसूत्रके भेद . ३
६ निक्षेपोमें नययोजना . ४
७ दोनो नयोका विषय एक-दूसरेसे भिन्न नही है ऐसी चर्चाका उपक्रम । वचन-प्रकारोमें नययोजना . ६
८ एक नयके विषयमें दूसरे नयके प्रवेशका स्वरूप . ७
९ दोनो नयोके विषयोकी मिश्रितताकी चर्चाका उपसहार .. ७
१० दोनो नय एक-दूसरेके विषयको कैसे देखते हैं इसका कथन . ८
११. दोनो नय एक ही वस्तुके किन-किन भिन्न रूपोका स्पर्श करते हैं इसका कथन ८
१२ सत् अर्थात् सम्पूर्ण सत्का लक्षण ९

१३	दोनो नय अलग-अलग मिथ्यादृष्टि कैसे बनते है इसका स्पष्टीकरण	९
१४	दोनो नयोमे यथार्थता कैसे आती है इसका स्पष्टीकरण	१०
१५	मूल नयोके साथ उत्तर नयोकी समानताका कथन	११
१६	उत्तर नयोमे सम्पूर्ण सद्ग्राही कोई एक नय नही है ऐसा पुन कथन	११
१७	किसी भी एक नयके पक्षमे ससार, सुख-दुखसम्बन्ध एव मोक्ष नही घट सकते ऐसा कथन	१२
१८	ये ही नय कभी सम्यग्दृष्टि नही होते और कभी होते हैं, इसके कारणका दृष्टान्तके द्वारा समर्थन	१३
१९	दृष्टान्त देनेकी सार्थकता सिद्ध करनेके लिए उसके गुणोका कथन	१४
२०	सापेक्षता न हो तो मिथ्यादृष्टि ही है इस बातका कतिपय प्रसिद्ध वादो द्वारा स्पष्टीकरण	१५
२१	अनेकान्तज्ञ मर्यादा और उसकी व्यवस्था कैसे करे इसका कथन	१६
२२	दोनो मूल नयोकी विषयमर्यादा	१६
२३	भेदका विशेष वर्णन	१७
२४	एक ही द्रव्य अनेक कैसे बनता है इसका स्पष्टीकरण	१८
२५	व्यजनपर्यायका उदाहरण	१८
२६	व्यजनपर्यायमें एकान्त अभिन्नता मानने पर क्या दोष आता है इसका कथन	१९
२७	प्रस्तुत उदाहरणमें व्यजनपर्याय और अर्थपर्यायका स्पष्ट रूपसे पृथक्करण	१९
२८	एकान्त मान्यतावालेमें अशास्त्रज्ञत्वके दोषका कथन	२०
२९	सात भगोका स्वरूप	२०
३०	अर्थपर्याय और व्यजनपर्यायमे सात भगोका विभाजन	२३
३१	केवल पर्यायार्थिक नयकी देशना पूर्ण नही है ऐसा कथन	२४
३२	केवल द्रव्यार्थिक नयकी देशनाका जो वक्तव्य है उसका युक्ति द्वारा कथन	२४
३३	वस्तुत पुरुष कैसे स्वरूपवाला है इसका कथन और उसके द्वारा जीवके स्वरूपका निश्चय	२६
३४	जीव एव पुद्गलके कथचित् भेदाभेदका समर्थन	२७

३५ जीव और पुद्गल द्रव्यकी ओतप्रोतताके कारण कैसे-कैसे शास्त्रीय व्यवहार होते हैं इसका कथन . २९
३६ अमुक तत्त्व बाह्य है और अमुक आभ्यन्तर है ऐसे विभागके बारेमें स्पष्टीकरण . २९
३७ प्रत्येक नयकी देशनाके अनुसार क्या-क्या फलित होता है उसका कथन ३०
३८ जैन दृष्टिसे देशना कैसी है इसका कथन . ३१
३९ जैन दृष्टिकी देशनामें अपवादको भी स्थान है इसका कथन . . ३२

२. द्वितीय काण्ड ३३–५७

१ दर्शन और ज्ञानका पृथक्करण . .. ३३
२ एक ही विषयके बारेमें दर्शनकालमें तथा ज्ञानकालमें क्या-क्या अन्तर होता है इसका कथन ३३
३ दर्शन और ज्ञानके समयभेदकी मर्यादाका कथन . ३४
४ समालोचनाके लिए आगमिक क्रमवादी-पक्षका उल्लेख ३५
५ समालोचनाके लिए सहवादी-पक्षका उल्लेख ३७
६ विरोधी पक्षको प्रश्न पूछकर सिद्धान्तका उपन्यास ३८
७ विरोधी पक्षके ऊपर सिद्धान्ती द्वारा दिये गये दोष . . ३९
८ क्रमवादी पक्षद्वारा किया गया बचाव और उसका सिद्धान्ती द्वारा दिया गया उत्तर . . ४१
९ पूर्वोक्त दृष्टान्तका विशदीकरण और उपसंहार . ४२
१० आगम विरोधका परिहार ४३
११ अपने पक्षमें आनेवाली शंकाका सिद्धान्ती द्वारा समाधान ४३
१२ एक होने पर भी भिन्न कहनेका दूसरा कारण ४४
१३ एकदेशीय मतका वर्णन ४४
१४ एकदेशीके द्वारा दिये गये दृष्टान्तकी समालोचना . ४६
१५ सिद्धान्तीका स्पष्टीकरण ४७
१६ अतिप्रसंगका निवारण ४८
१७ की गई व्यवस्थाका विशेष स्पष्टीकरण . ४९
१८ श्रुतज्ञान दर्शन क्यों नहीं कहा जा सकता ? इस शंकाका उत्तर ४९
१९ अवधिदर्शनकी मर्यादा ५०
२० एक ही केवलोपयोगमें ज्ञान-दर्शन शब्दकी उपपत्ति . ५०

२१. शास्त्रमे आनेवाले विरोधका परिहार . ५०
२२ श्रद्धाके अर्थमे प्रयुक्त दर्शन शब्दका स्पष्टीकरण ५१
२३ सादि-अपर्यवसित शब्दमे हुई किसीकी भ्रान्तिका उल्लेख और उसका निवारण ५२
२४ जीव और केवलके भेदकी आशका और उसका दृष्टान्त-पूर्वक निरसन . ५४
२५ अभिन्न पर्यायोकी भिन्नताका उपपादन ५७

३. तृतीय काण्ड ५८–१०३

१ सामान्य और विशेष इन दोनोके परस्पर अभेदका समर्थन ५८
२ प्रतीत्यवचन किसे कहते हैं और किसलिए ? ५९
३ एक वस्तुमें अस्तित्व और नास्तित्वकी उपपत्ति ६०
४ एक ही पुरुषमे भेदाभेदकी व्यवस्था ६२
५ द्रव्य और गुणके भेदका पूर्वपक्षके रूपमे निर्देश ६३
६ द्रव्य और गुणके भेदके निरासके प्रसगमे गुण और पर्यायके अभेदकी चर्चा ६३
७ द्रव्य और गुणके एकान्त अभेदवादीका ही विशेष कथन ६७
८ सिद्धान्तीका कथन ६७
९ एकान्त अभेदवादीका बचाव ६८
१० सिद्धान्तीका कथन ६८
११ एकान्त अभेदवादीका प्रश्न और उसका सिद्धान्ती द्वारा दिया गया उत्तर . ६८
१२ किसी भेदवादी द्वारा किये गये द्रव्य और गुणके लक्षणकी तथा उसके भेदवादकी समालोचना ७१
१३ प्रस्तुत चर्चाका प्रयोजन ७२
१४ अनेकान्तकी व्यापकता ७३
१५ प्रमेयको लेकर अनेकान्त दृष्टि लागू करनेके कतिपय दृष्टान्त ७५
१६ द्रव्यगत उत्पाद एव नाशके प्रकार ७७
१७ उत्पाद और विनाशका विशेष स्वरूप ७८
१८ उत्पत्ति, नाश और स्थितिके कालभेद आदिकी चर्चा ८०
१९ वैशेषिक आदि सम्मत द्रव्योत्पादकी प्रक्रियाकी चर्चा ८३
२० श्रद्धा और बुद्धिप्रधान आगमका पृथक्करण ८६

२१ नयवादकी चर्चा ... ८९
२२ कार्यके स्वरूपके वारेमे एकान्त और अनेकान्त दृष्टिका अन्तर ९२
२३ कारण-विषयक वादोका एकान्तके कारण मिथ्यात्व और अनेकान्तके कारण सम्यक्त्व . . ९४
२४ आत्माके वारेमे नास्तित्व आदि छ पक्षोका मिथ्यात्व और अस्तित्व आदि छ पक्षोका सम्यक्त्व . ९५
२५ वादमे अनेकान्तदृष्टिके अभावसे आनेवाले दोष ९६
२६ तत्त्वप्ररूपणाकी योग्य रीतिका कथन ९८
२७ केवल एक-एक नयाश्रित सूत्रमें सम्पूर्ण सूत्रत्वकी मान्यतासे आनेवाले दोष . ९९
२८ शास्त्र प्ररूपणाके अधिकारी होनेके लिए आवश्यक गुण . . ९९
२९ तत्त्वोके पूर्ण और निश्चित ज्ञानके लिए क्या करना चाहिए इसका कथन १००
३० गम्भीर चिन्तन-विहीन वाह्य आडम्वरमे आनेवाले दोषोका कथन . १००
३१ अकेले ज्ञान और अकेली क्रियाकी अनुपयोगिताका कथन १०१
३२ उपसहारमे जिनवचनकी कुशलकामना १०२

४. परिशिष्ट १०५–११४

१ भगोका इतिहास १०५, २ अवक्तव्यका स्थान; ३ स्याद्वादके भगोकी विशेषता १११।

५. प्रस्तावनाकी शब्दसूची १
६. सन्मति प्रकरणकी शब्दसूची १५